गुरुगीता का अर्थ और साधक की जिज्ञासा

गुरुगीता के पाठ से क्या लाभ होगा? यह प्रश्न हर साधक के मन में स्वाभाविक रूप से उठता है। चाहे श्रीकृष्ण की गीता बार-बार यह शिक्षा दे कि साधक को फल की आसक्ति छोड़ देनी चाहिए, फिर भी साधक अपने साधन के परिणाम के प्रति उत्सुक रहता है। जप, तप, पूजा और उपासना के बाद साधक यही सोचता है मिलने वाला फल क्या है? गुरुगीता का पाठ करने वाले साधक के भीतर भी यही जिज्ञासा जागती है कि इस महान ग्रंथ के जप से जीवन में कौन-सा परिवर्तन आएगा, कौन-सी बाधाएँ दूर होंगी और कौन-से लाभ प्राप्त होंगे।

गुरु-सान्निध्य के तुल्य फल

सर्वोप द्रवकुष्ठादिदुष्ट दोषनिवारिणी।
यत्फलं गुरु-सान्निध्यात्तत्फलं पठनाद्भवेत्।।

इसका भाव यह है कि गुरु के प्रत्यक्ष सान्निध्य से जो फल मिलता है, वही फल गुरुगीता के पाठ से भी प्राप्त होता है। साधक के जीवन से कष्ट दूर होते हैं, उपद्रव समाप्त होते हैं, रोग, दुःख और दोष नष्ट होते हैं। मानसिक अशांति कम होकर स्थिरता आती है और साधक के भीतर दिव्य शक्ति का उदय होता है।

विभूतियों और सिद्धियों की प्राप्ति

महाव्याधिहरा सर्वविभूतेः सिद्धिदा भवेत्।
अथवा मोहने वश्ये स्वयमेव जपेत् सदा।।

गुरुगीता साधकों की महाव्याधियों का नाश करती है और सभी प्रकार की विभूतियां तथा सिद्धियां प्रदान करती है। यदि कोई साधक आकर्षण, सम्मोहन या वश्यता हेतु जप करना चाहे, तो यह भी संभव है, बशर्ते उद्देश्य शुद्ध और धर्मसंगत हो।

आसन की महत्ता

कुशदूर्वासनै देवी ह्यासने शुभ्रकम्बले।
उपविश्य ततो देवी जपेदेकाग्रमानसः।।

साधना में आसन का चयन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दूर्वा के आसन, शुभ्र कंबल या विशेष आसन पर बैठकर किया गया जप साधक की ऊर्जा स्थिर करता है और एकाग्रता बढ़ाता है। पहले मन और शरीर को स्थिर करना चाहिए, फिर एकाग्र होकर जप करना चाहिए।

आसन के रंग और साधना का प्रभाव

शुक्लं सर्वत्र वै प्रोक्तं वश्ये रक्तासनं प्रिये।
पद्मासने जपोक्तित्यं शान्तिवश्यकरं परम्।।

सामान्य साधना में श्वेत (सफेद) आसन श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि यह पवित्रता और शांति का प्रतीक है। वश्य साधना के लिए लाल आसन उपयुक्त माना गया है। पद्मासन में बैठकर नित्य जप करने से मन की शांति बढ़ती है, साधक का प्रभाव बढ़ता है और आकर्षण-शक्ति सिद्ध होती है।

किन आसनों से बचना चाहिए

वस्त्रासने च दारिद्र्यं पाषाणे रोगसम्भवः।
मेदिन्यां दुःखमाप्नोति काष्ठे भवति निष्फलम्।।

कपड़े के बिछे हुए ढीले आसन पर जप करना दरिद्रता लाता है। पत्थर पर बैठकर जप करने से रोग उत्पन्न होते हैं। सीधे धरती पर बैठकर जप करने से दुःख का अनुभव होता है। लकड़ी (काष्ठ) पर किया गया जप निष्फल होता है। इससे स्पष्ट है कि साधना में ऊर्जा की दिशा और प्रवाह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विभिन्न आसनों के फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्ष श्रीव्यघ्रचर्मणि।
कुशासने ज्ञानसिद्धिः सर्वसिद्धिस्तु कम्बले।।

कृष्णमृग की खाल पर बैठकर साधना से ज्ञान की सिद्धि होती है। व्याघ्रचर्म पर बैठने से मोक्ष का लाभ मिलता है। कुशासन चित्त को अत्यंत स्थिर और शुद्ध बनाकर ज्ञान-साधना में सहायक होता है। साधारण कंबल का आसन भी विविध सिद्धियां प्रदान करता है।

जप की दिशा का विज्ञान

आग्नेय्यां कर्षणं चैव वायव्यां शत्रुनाशनम्।
नैर्ऋत्यां दर्शनं चैव ईशान्यां ज्ञानमेव च।।

आग्नेय कोण में बैठकर जप करने से आकर्षण और कर्षण शक्ति बढ़ती है। वायव्य कोण में जप शत्रुओं का नाश करता है। नैऋत्य कोण में दिव्य दर्शन की संभावना बढ़ती है। ईशान कोण परम ज्ञान का केंद्र माना गया है।

उदङ्मुखः शान्तिजप्ये वश्ये पूर्वमुखस्तथा।
याम्ये तु मारणं प्रोक्तं पश्चिमे च धनागमः।।

मंत्रजप के बारे में बताते हुए शिव कहते है कि उत्तरमुख होकर जप शांति देता है। पूर्वमुख जप वश्यता और प्रभाव वृद्धि देता है। दक्षिणमुख जप शत्रुओं के विनाश हेतु बताया गया है। पश्चिममुख जप धन-प्राप्ति कराता है।

मोहन, बंधमोक्ष और प्रभावशक्ति

मोहनं सर्वभूतानां बन्धमोक्षकं परम्।
देवराज्ञां प्रियकरं राजानं वशमानयेत्।।

गुरुगीता सभी प्राणियों को मोहित करने की शक्ति रखती है। यह बंधनों से मुक्ति देने वाला अद्भुत ग्रंथ है। यह साधक को ऐसा तेज और प्रभाव प्रदान करता है कि राजा तक को वश में करने की क्षमता मिलती है अर्थात नेतृत्व, प्रभाव और आदर की वृद्धि।

वाणी का प्रभाव और दुष्कर्मों का नाश

मुखस्तम्भकरं चैव गुणानां च विवर्धनम्।
दुष्कर्मनाशनं चैव तथा सत्कर्मसिद्धिदम्।।

गुरुगीता वाणी को स्थिर, प्रभावशाली और सारगर्भित बनाती है। साधक के गुणों की वृद्धि होती है। पुराने दुष्कर्मों का नाश होता है और सत्कर्मों की सिद्धि निश्चित हो जाती है।

ग्रह, स्वप्न और कार्य-सिद्धि

असिद्धं साधयेत् कार्यं नवग्रहभयापहम्।
दुःस्वप्ननाशनं चैव सुस्वप्न फलदायकम्।।

गुरुगीता असंभव कार्यों को भी संभव बना देती है। नवग्रहों का भय दूर होता है। बुरे स्वप्न मिटते हैं और शुभ स्वप्नों का फल प्राप्त होता है।

मोहशांति और आत्मज्ञान

मोहशान्तिकरं चैव बन्धमोक्षकरं परम्।
स्वरूपज्ञाननिलयं गीता शास्त्रमिदं शिवे।।

यह ग्रंथ मोह का शमन करता है, बंधनों से मुक्ति देता है और साधक को आत्मस्वरूप का साक्षात्कार कराता है। यह शिव की ओर ले जाने वाला सर्वोच्च मार्ग है।

सब मनुष्य एक-समान है और जो मनुष्य अपनी शक्ति का जितना विस्तार करता है उतना वह जीवन में उन्नत होता है, पुष्ट बनता है, श्रेष्ठ बनता है...।

शक्ति तो सभी में होती है..., आवश्यकता है उसके विस्तार की...।

और विस्तार के लिये आवश्यक है मंथन, मन का मंथन...।

अपने मन का मंथन करते समय किसी भी प्रकार का भावनात्मक उद्वेग नहीं रखें। निष्पक्ष होकर परखें, तब अपने कार्य के गुण-दोष, अपने व्यक्तित्व के गुण-दोष, अपने विचारों के गुण-दोष सब स्पष्ट हो जाते है।

फिर स्पष्ट होता है कि शक्ति का विस्तार किस ओर करना है, किस ओर नहीं करना है...

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

पहला तल है - आपका मन। दूसरा तल है - आपकी आत्मा और तीसरा तल है - परमात्मा अर्थात् शिव।

पहले तल से ओर गहरे जाओंगे तो आत्मा का तल प्राप्त होगा और फिर उससे भी गहरे जाओंगे तो परमात्मा का तल प्राप्त होगा। वहां विराट् ऊर्जा का भण्डार है। शिव और शक्ति का भण्डार है और वह कभी खाली नहीं होती लेकिन वहां पहुंचा जा सकता है केवल और केवल प्रयत्न द्वारा। केवल मन से नहीं पहुंच सकते, क्योंकि मन तो गोल-गोल वर्तुल रूप में घूमने वाला है...

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

इच्छाएं निश्चय पूर्वक पूर्ण होती हैं

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चयम्।
नित्यं सौभाग्यदं पुण्यं तापत्रयकुलापहम्।।

साधक जिस इच्छा का चिंतन करता है, उसे वह निश्चित रूप से प्राप्त होती है। गुरुगीता सौभाग्य देती है, पुण्य बढ़ाती है और तीनों तापों का नाश करती है।

स्त्रियों के लिए विशेष कल्याणकारी

सर्वशान्तिकरं नित्यं तथा वन्ध्या सुपुत्रदम्।
अवैधव्यकरं स्त्रीणां सौभाग्यस्य विवर्धनम्।।

यह नित्य शांति देती है। संतानहीन स्त्री को सुपुत्र प्राप्त होता है। स्त्रियों को विधवा-दशा से रक्षा मिलती है और सौभाग्य में वृद्धि होती है।

आयु, आरोग्य और ऐश्वर्य

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्।
निष्कामजापी विधवा पठेन्मोक्षमवाप्नुयात्।।

यह दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य और ऐश्वर्य देती है। संतान तथा पौत्र-पौत्रियों की वृद्धि होती है। विधवा स्त्री यदि निष्काम भाव से जप करे तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है।

अगले जन्म में भी सौभाग्य

अवैधव्यं सकामा तु लभते चान्यजन्मनि।
सर्वदुःखमयं विघ्नं नाशयेत्तापहारकम्।।

इच्छापूर्वक जप करने वाली स्त्री को अगले जन्म में भी अखंड सौभाग्य प्राप्त होता है। गुरुगीता सभी दुःखों और विघ्नों का नाश करती है।

चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति

सर्वपापप्रशमनं धर्मकामार्थमोक्षदम्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।

गुरुगीता पापों को शांत करती है और धर्म, अर्थ, काम, मोक्षचारों पुरुषार्थ प्रदान करती है। साधक जो इच्छा करता है, वह निश्चित रूप से पूर्ण होती है।

कामधेनु, कल्पवृक्ष और चिंतामणि की तरह फलदायी

काम्यानां कामधेनुर्वै कल्पिते कल्पपादपः।
चिन्तामणिश्चिन्तितस्य सर्वमंगलकारकम्।।

गुरुगीता कामनाओं की कामधेनु है, इच्छाओं को पूर्ण करने वाला कल्पवृक्ष है और मनोकामनाओं को साकार करने वाली चिंतामणि है।

गुरुभक्ति का उदय

लिखित्वा पूजयेद्यस्तु मोक्षश्रियमवाप्नुयात्।
गुरुभक्तिर्विशेषेण जायते हृदि सर्वदा।।

जो साधक गुरुगीता को लिखकर पूजन करे, उसे मोक्ष का महान सौभाग्य प्राप्त होता है और उसके हृदय में गुरु-भक्ति का सतत उदय होता रहता है।

सभी संप्रदायों द्वारा स्वीकार्य

जपन्ति शाक्ताः सौराश्च गाणपत्याश्च वैष्णवाः।
शैवाः पाशुपताः सर्वे सत्यं सत्यं न संशयः।।

शाक्त, सौर, गणपति उपासक, वैष्णव, शैव और पाशुपतसभी गुरुगीता का जप करते हैं। यह सत्य है, इसमें कोई संशय नहीं।